श्रीः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्रीमान् वेङ्कटनाथार्यः कवितार्किककेसरी।
वेदान्ताचार्यवर्यो मे सन्निधत्तां सदा हृदि॥

श्रीशैल श्रीरङ्गाचार्यै रचितं

॥ श्रीश्रीनिवासगद्यम् ॥

This document has been prepared by*

Sunder Kidambi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुजमहादेशिकन्

His Holiness *śrīmad āṇḍavan* of *śrīraṅgam*

*This was typeset using LaTeX and the **skt** font.

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

॥ श्रीश्रीनिवासगद्यम् ॥

श्रीमदखिलमहीमण्डलमण्डनधरणिधर मण्डलाखण्डलस्य⋆ निखिलसुरासुरवन्दित वराहक्षेत्र विभूषणस्य⋆ शेषाचल गरुडाचल वृषभाचल नारायणाचलाञ्जनाचलादि शिखरिमालाकुलस्य⋆ नाथमुख बोधनिधिवीथिगुणसाभरण सत्त्वनिधि तत्त्वनिधि भक्तिगुणपूर्ण श्रीशैलपूर्ण गुणवशंवद परमपुरुषकृपापूर विभ्रमदतुङ्गशृङ्ग गलद्गगनगङ्गासमालिङ्गितस्य⋆ सीमातिग गुण रामानुजमुनि नामाङ्कित बहु भूमाश्रय सुरधामालय वनरामायत वनसीमापरिवृत विशङ्कटतट निरन्तर विजृम्भित भक्तिरस निर्झरानन्तार्याहार्य प्रस्रवणधारापूर विभ्रमदसलिलभरभरित महातटाक मण्डितस्य⋆ कलिकर्दम मलमर्दन कलितोद्यम विलसद्यम नियमादिम मुनिगणनिषेव्यमाण प्रत्यक्षीभवन्निजसलिल समज्जन नमज्जन निखिलपापनाशन पापनाशन तीर्थाध्यासितस्य⋆ मुरारिसेवक जरादिपीडित निरार्तिजीवन निराश भूसुर वरातिसुन्दर सुराङ्गनारति कराङ्गसौष्ठव कुमारताकृति कुमारतारक समापनोदय दमानपातक महापदामय विहापनोदित सकलभुवन विदित कुमारधाराभिधान तीर्थाधिष्ठितस्य⋆ धरणितल गत सकल हतकलिल शुभसलिल गतबहुळ विविधमल हतिचतुर रुचिरतर विलोकनमात्र विदळित विविधमहापातक स्वामिपुष्करिणी समेतस्य⋆ बहुसङ्कट नरकावट पतदुत्कट कलिकङ्कट कलुषोद्भट जनपातक विनिपातक रुचिनाटक करहाटक कलशाहृत कमलारत शुभमज्जनजल सज्जनभरित निजदुरित हतिनिरत जनसतत निरर्गळपेपीयमान सलिल सम्भृत विशङ्कट कटाहतीर्थ विभूषितस्य⋆ एवमादिम भूरिमञ्जिम सर्वपातक गर्वहापक सिन्धुडम्बर हारिशंबर विविधविपुल पुण्यतीर्थनिवह निवासस्य⋆ श्रीमतो वेङ्कटाचलस्य शिखरशेखरमहाकल्पशाखी⋆ खर्वीभवदति गर्वीकृत गुरुमेर्वीशगिरि मुखोर्वीधर कुलदर्वीकर दयितोर्वीधर शिखरोर्वी⋆ सतत सदूर्वीकृति चरणघन गर्वचर्वणनिपुण तनुकिरणमसृणित गिरिशिखरशेखरतरुनिकर तिमिरः⋆ वाणीपतिशर्वाणी दयितेन्द्राणीश्वर मुख नाणीयोरसवेणी निभशुभवाणी नुतमहिमाणी⋆ यस्तर कोणी भवदखिल भुवनभवनोदरः⋆ वैमानिकगुरु भूमाधिक गुण रामानुज कृतधामाकर करधामारि

दरललामाच्छकनक दामायित निजरामालय नवकिसलयमय तोरणमालायित वनमालाधरः⋆ कालाम्बुद मालानिभ नीलालक जालावृत बालाब्ज सलीलामल फालाङ्कसमूलामृत धाराद्वयावधीरण धीरललिततर विशदतर घन घनसारमयोर्ध्वपुण्ड्र रेखाद्वयरुचिरः⋆ सुविकस्वर दळभास्वर कमलोदर गतमेदुर नवकेसर ततिभासुर परिपिञ्जर कनकाम्बर कलितादर ललितोदर तदालम्ब जम्भरिपु मणिस्तम्भ गम्भीरिमदम्भस्तम्भ समुज्जृम्भमाण पीवरोरुयुगळ तदालम्ब पृथुल कदळी मुकुल मदहरणजङ्घाल जङ्घायुगळः⋆ नव्यदल भव्यकल पीतमल शोणिमल सन्मृदुल सत्किसलयाश्रुजलकारि बल शोणतल पदकमल निजाश्रय बलबन्दीकृत शरदिन्दुमण्डली विभ्रमदादभ्र शुभ्र पुनर्भवाधिष्ठिताङ्गुळीगाढ निपीडित पद्मासनः⋆ जानुतलावधि लम्बि विडम्बित वारण शुण्डादण्ड विजृम्भित नीलमणिमय कल्पकशाखा विभ्रमदायि मृणाळलतायत समुज्ज्वलतर कनकवलय वेल्लितैकतर बाहुदण्डयुगळः⋆ युगपदुदित कोटि खरकर हिमकर मण्डल जाज्वल्यमान सुदर्शन पाञ्चजन्य समुत्तुङ्गित शृङ्गापर बाहु युगळः⋆ अभिनवशाण समुत्तेजित महामहा नीलखण्ड मथखण्डन निपुण नवीन परितप्त कार्तस्वर कवचित महनीय पृथुल सालग्राम परम्परा गुम्भित नाभिमण्डल पर्यन्त लम्बमान प्रालम्बदीप्ति समालम्बित विशाल वक्षःस्थलः⋆ गङ्गाझर तुङ्गाकृति भङ्गावळि भङ्गावह सौधावळि बाधावह धारानिभ हारावळि दूराहत गेहान्तर मोहावह महिम मसृणित महातिमिरः⋆ पिङ्गाकृति भृङ्गारु निभाङ्गार दळाङ्गामल निष्कासित दुष्कार्यघ निष्कावळि दीपप्रभ नीपच्छवि तापप्रद कनकमालिका पिशङ्गित सर्वाङ्गः⋆ नवदळित दळवलित मृदुललित कमलतति मदविहति चतुरतर पृथुलतर सरसतर कनकसरमय रुचिरकण्ठिका कमनीयकण्ठः⋆ वाताशनाधिपति शयन कमन परिचरण रतिसमेताखिल फणधरतति मतिकरकनकमय नागाभरण परिवीताखिलाङ्गावगमित शयनभूताहिराज जातातिशयः⋆ रविकोटी परिपाटी धरकोटी रवराटी कितवाटी रसधाटी धरमणिगणकिरण विसरण सततविधुत तिमिरमोह गर्भगेहः⋆ अपरिमित विविधभुवन भरिताखण्ड ब्रह्माण्डमण्डल पिचण्डिलः⋆ आर्यधुर्यानन्तार्य पवित्र खनित्रपात पात्रीकृत निजचुबुक गतव्रणकिण विभूषणवहनसूचित श्रितजनवत्सलतातिशयः⋆ मड्डुडिण्डिम ढमरु जर्झर काहळी पटहावळी मृदुमर्दलालि मृदङ्ग दुन्दुभि ढक्किकामुक हृद्य वाद्यक मधुरमङ्गळ नादमेदुर विसृमर सरस गानरस रुचिर सन्तत सन्तन्यमान

नित्योत्सव पक्षोत्सव मासोत्सव सम्वत्सरोत्सवादि विविधोत्सव कृतानन्दः⋆ श्रीमदानन्दनिलय विमानवासः⋆ सतत पद्मालया पदपद्मरेणु सञ्चितवक्षस्स्थल पटवासः⋆ श्रीश्रीनिवासः⋆ सुप्रसन्नो विजयताम्।

नाटारभि भूपाळ बिलहरि मायामाळव गौळा असावेरी सावेरी शुद्धसावेरी देवगान्धारी धन्यासी बेगड हिन्दूस्तानी कापी तोडी नाटकुरुञ्जी श्रीराग सहन अठाण सारङ्गी दर्बारु पन्तुवराळी वराळी कल्याणी भूरिकल्याणी यमुनाकल्याणी हुशेनी जञ्झोठी कौमारी कन्नड खरहरप्रिया कलहंस नादनामक्रिया मुखारी तोडी पुन्नागवराळी काम्भोदी भैरवी यदुकुलकाम्भोदी आनन्दभैरवी शङ्कराभरण मोहन रेगुप्ती सौराष्ट्री नीलाम्बरी गुणक्रिया मेघगर्जनी हंसध्वनी शोकवराळी मध्यमावती जेञ्जुरुटी सुरुटी द्विजावन्ती मलयाम्बरी कापि परशुधनासरी देशिकतोडी आहिरि वसन्तगौळी सन्तु केदारगौळा कनकाङ्गी रत्नाङ्गी गानमूर्ती वनस्पती वाचस्पती दानवती मानरूपी सेनापती हनुमत्तोडी धेनुका नाटकप्रिया कोकिलप्रिया रूपवती गायकप्रिया वकुळाभरण चक्रवाक सूर्यकान्त हाटकाम्बरी झङ्कारध्वनी नटभैरवी गीर्वाणी हरिकाम्भोदी धीरशङ्कराभरण नागानन्दिनी यागप्रिया विसृमर सरस गानरसेत्यादि सन्तत सन्तन्यमान नित्योत्सव पक्षोत्सव मासोत्सव सम्वत्सरोत्सवादि विविधोत्सव कृतानन्दः⋆ श्रीमदानन्दनिलयवासः⋆ सतत पद्मालया पदपद्मरेणु सञ्चितवक्षस्स्थल पटवासः⋆ श्रीश्रीनिवासः⋆ सुप्रसन्नो विजयताम्।

श्री अलर्मेल्मङ्गासमेत श्रीश्रीनिवास स्वामी सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा पनस पाटली पालाश बिल्व पुन्नाग चूत कदळी चन्दन चम्पक मञ्जुळ मन्दार हिन्तालादि तिलक मातुलुङ्ग नारिकेळ क्रौञ्चाशोक माधूकामलक हिन्दुक नागकेतक पूर्णकुन्द पूर्णगन्ध रस कन्द वन वञ्जुळ खर्जूर साल कोविदार हिन्ताल पनस विकट वैकसवरुण तरुघमरण विचुळङ्काश्वत्थ यक्ष वसुध वर्माध मन्त्रिणी तिन्त्रिणी बोध न्यग्रोध घटवटल जम्बूमतल्ली वीरचुल्ली वसति वासती जीवनी पोषणी प्रमुख निखिल सन्दोह तमाल माला महित विराजमान चषक मयूर हंस भारद्वाज कोकिल चक्रवाक कपोत गरुड नारायण नानाविध पक्षिजाति समूह ब्रह्म क्षत्रिय वैश्य शूद्र नानाजात्युद्भव देवता निर्माण माणिक्य वज्र वैढूर्य गोमेधिक पुष्यराग पद्मरागेन्द्र प्रवाळमौक्तिक स्फटिक हेम रत्नखचित धगद्धगायमान

रथगज तुरग पदाति सेना समूह भेरी मद्दळ मुरवक झल्लरी शङ्ख काहळ नृत्यगीत ताळवाद्य कुम्भवाद्य पञ्चमुखवाद्य अहमीमार्गन्नटीवाद्य किटिकुन्तलवाद्य सुरटीचौण्डोवाद्य तिमिलकविताळवाद्य तक्कराग्रवाद्य घण्टाताडन ब्रह्मताळ समताळ कोट्टरीताळ ढक्करीताळ एक्काळ धारावाद्य पटह कांस्यवाद्य भरतनाट्यालङ्कार किन्नर किम्पुरुष रुद्रवीणा मुखवीणा वायुवीणा तुम्बुरुवीणा गान्धर्ववीणा नारदवीणा स्वरमण्डल
रावणहस्तवीणास्तक्रियालङ्क्रियालङ्कृतानेकविधवाद्य वापीकूपतटाकादि गङ्गा-यमुना
रेवावरुणा शोणनदीशोभनदी सुवर्णमुखी वेगवती वेत्रवती क्षीरनदी बाहुनदी गरुडनदी कावेरी ताम्रपर्णी प्रमुखाः महापुण्यनद्यः⋆ सकलतीर्थैः सहोभयकूलङ्गत सदाप्रवाह ऋग्यजुस्सामाथर्वण वेदशास्त्रेतिहास पुराण सकलविद्याघोष भानुकोटिप्रकाश चन्द्रकोटि समान नित्यकल्याण परम्परोत्तरोत्तराभिवृद्धिर्भूयादिति

भवन्तो महान्तोऽनुगृह्णन्तु !
ब्रह्मण्यो राजा धार्मिकोऽस्तु !
देशोऽयं निरुपद्रवोऽस्तु !
सर्वे साधुजनास्सुखिनो विलसन्तु !
समस्तसन्मङ्गळानि सन्तु !
उत्तरोत्तराभिवृद्धिरस्तु !
सकलकल्याण समृद्धिरस्तु।

॥ इति श्रीश्रीनिवासगद्यं सम्पूर्णम् ॥

www.prapatti.com